रोगनाशक व स्वास्थ्यवर्द्धक – पीपल

अभय कुमार जैन
भवानी मंडी, झालावाड़ (राज.)

वृक्ष मानव–जीवन में समृद्धि के आधार होते हैं। उन्हें रोपने और सींचने से पुण्य ही नहीं सुख और सौभाग्य भी मिलता है।

मनुष्य का जीवन ज्ञान और विज्ञान वनों में विकसित हुआ। युगों–युगों में मुनि मनीषी प्रकृति के उपासक रहे। प्राचीनकाल में ध्यान, तपस्या और चिंतन–मनन की आश्रय स्थली वन ही होते हैं। ऋषि–मुनि वनस्पतियों को यज्ञ, तप और अनुष्ठानों में विशेष महत्व देते थे–श्री कृष्ण ने स्वयं को सब वृक्षों में मौजूद बताया। पीपल की जड़ में विष्णु, तने में भगवान शंकर और अग्रभाग में साक्षात बृह्मा जी स्थित हैं।

श्रीमद् भागवत गीता में यह उद्धत है जिसमें भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को अपनी दिव्य विभूतियों के बारे में बताते हुए कहा कि मैं महर्षियों में भृगु, स्थिर रहने वालो में हिमालय पर्वत, यज्ञों में जप यज्ञ, ज्योतियों में किरणों वाला सूर्य, वेदों में सामवेद, जलाशयों में समुद्र, वचनों में ओंकार तथा समस्त वृक्षों में पीपल का वृक्ष हूँ। अतः सृष्टि में पीपल को सर्वश्रेष्ठ वृक्ष माना गया है और हिन्दू संस्कृति में पीपल के रूप में साक्षात प्रभु श्री कृष्ण पृथ्वी पर विराजमान हैं।

पीपल को वृक्षों का राजा कहते हैं। इसकी वन्दना में एक श्लोक देखिए–

"मूलम ब्रह्मा, त्वचा विष्णु, सखा शंकरमेव, पत्रें पत्रेका सर्वदेवानाम वृक्षराज नमस्तुते।"

पदम पुराण के सृष्टि खण्ड में पीपल माहात्म्य में बताया गया है कि अश्वत्थ (पीपल) के स्पर्श से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, जो मनुष्य स्नान से निवृत्त हो पीपल के वृक्ष को स्पर्श करता है, वह सारे पापों से मुक्त रहता है और पीपल के वृक्षारोपण से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। पीपल की जड़ के पास बैठकर जो जप, होम, स्त्रोत, पाठ और यंत्र मंत्रादि के अनुष्ठान करते हैं, उनका फल भी अनन्त होता है।

बाल वैधव्य योग वाली कन्या यदि एक मास तक पीपल को सींचे तो वह सौभाग्यवती होती है। ज्योतिष शास्त्र में वृहस्पति ग्रह की प्रसन्नता के लिए पीपल के वृक्ष लगाना और सींचना विघ्नों के निवारण में प्रमुख माना है। उपनिषदों और पुराणों में पीपल को विष्णु का साक्षात रूप माना है।

आचार्य आनन्दगिरी के अनुसार सभी वनस्पतियों में पीपल की सर्वश्रेष्ठता निर्विवाद है। जगतगुरू श्री रामानुजाचार्य ने "गीता काव्य" में पीपल को सबसे अधिक पूज्य माना है। धर्मशास्त्रों के मान्यतानुसार दरिद्रता से बचने के लिए शनिवार को पीपल का पूजन करना चाहिए। ग्रंथों में तो यहां तक मान्यता है कि प्रातः उठकर पीपल के दर्शन मात्र से ही आयु, धन तथा धर्म की प्राप्ति होती है। पीपल का पूजन भगवान विष्णु के समान फलदायी है।

यह निर्विवाद है जो व्यक्ति पीपल के वृक्ष को नित्य स्पर्श करेंगे उनके सब कार्य सिद्ध होंगे तथा शनि से किसी प्रकार का कष्ट न होगा और उन्हें गृहजन्य पीड़ा से मुक्ति मिलेगी।

नारद पुराण में सृष्टि के सृजन हार ब्रह्माजी का कथन है कि कार्तिक माह में शुक्ल पक्ष में अर्द्ध अक्षय नवमी आती है, उस दिन पीपल की जड़ के समीप देवताओं, ऋषियों एवं पितरों का

विधिपूर्वक तर्पण करें। सूर्य देवता को अर्घ्य दें। जप, दान, पूजा अर्चना, होम यज्ञ करने वालों के सब कुछ अक्षय हो जाता है।

पीपल के वृक्ष में एल्कोलाइजस व स्टार्च होते हैं जो वातावरण को स्वच्छ करते हैं। सभी वृक्षों में केवल पीपल का वृक्ष ही सर्वाधिक मात्रा में प्राणवायु का उत्सर्जन करता है। एक पूर्ण विकसित पीपल का वृक्ष एक घंटे में 1792 किलोग्राम ऑक्सीजन छोड़ता है। पीपल कार्बनडाई ऑक्साइड का शतप्रतिशत एब्जार्बर है, तभी तो पीपल को रोगनाशक और स्वास्थ्यवर्द्धक वृक्ष माना गया है। पीपल प्रदूषण शोषण एवं प्राण वायु ऑक्सीजन का जनक कहा जाता है। यह वृक्ष चौबीसों घंटे अत्यधिक मात्रा में प्राणवायु (ऑक्सीजन) छोड़ता है, जिससे प्रकृति का संतुलन बना रहता है।

पीपल के पत्ते का फलक और डंठल अधिक पतला होता है, जिसकी वजह से शांत मौसम में भी पत्ते हिलते रहते हैं एवं स्वच्छ ऑक्सीजन देते हैं।

आज के वायु प्रदूषण युक्त वातावरण में पीपल का वृक्ष एकमात्र रक्षक के रूप में विद्यमान है। वैज्ञानिक अनुसंधान भी बताते हैं कि पीपल की पत्तियां निरन्तर स्वस्थ ऑक्सीजन उत्सर्जित करती हैं।

घर में सामाजिक कार्य में पीपल की बदंनवार या कलश में लगाने के लिए उपयुक्त है। पीपल को 5 देव वृक्षों में एक माना जाता है। अतः अश्वत्थ पंच पल्लवों में भी एक है। आयुर्वेद में पिप्पलाध लौह, पिप्प लासव आदि अनेक औषधियों का निर्माण पीपल से होता है। आयुर्वेदाचार्यो के अनुसार कई बीमारियों का शमन पीपल के जरिये होता है।

औषधीय उपयोग

चरण संहिता, अष्टांग संग्रह, सुश्रुत संहिता आदि आयुर्वेदिक ग्रंथों में पीपल के उपयोग का वर्णन किया गया है।

पिघलो, दुर्जरः शीत, पित, श्लेष्म व्रणाख जिंतु।
गुरू स्तुवर को रूक्षेः वर्ण्यो। रक्त विशो धनो।

अर्थात यह कषाय रस वाला रूक्ष शीतल पचने में भारी पित्त, कफ संबंधी रोग और रक्त विकार दूर करता है।

डॉक्टर देसाई लिखते हैं–सुजाक में पीपल के कोमल पत्तों को दूध में उबालकर देते हैं, उससे शौच, शुद्धि तथा मूत्र में दाह व पूय का ह्रास होता है। कोमल पत्ते व लाख शहद के साथ देने से रक्त स्राव रूक जाता है।

- ❖ पीपल की छाल को पानी में उबालकर पीने से खांसी एवं दमा ठीक हो जाता है।
- ❖ मुंह में छाले हो जाने पर पीपल के पत्ते का चूर्ण शहद से या ताजे पानी के साथ देने से ठीक हो जाते हैं।
- ❖ इसकी छाल को पानी में घीसकर फोड़े फुंसियों पर लगाने से जल्दी ठीक हो जाते हैं।
- ❖ हाथ–पांव फटने, बिवाई फुटने पर पीपल के पत्तों का रस या पत्तों का दूध लगाने से लाभ मिलता है।
- ❖ पीपल की ताजी टहनी से प्रतिदिन दांतुन करने से दांत मजबूत होते हैं और मसूड़ों की सूजन खत्म हो जाती है एवं मुंह की दुर्गंध भी दूर हो जाती है।

हमारे धर्म शास्त्रों में पेड़ लगाने के कार्य को बड़े पुण्य का कार्य माना गया है। भविष्य पुराण में लिखा है जो व्यक्ति छायादार पेड़, फूल और फल देने वाले वृक्षों का रोपण करता है या मार्ग में तथा देवालयों में वृक्षों को लगाता है वह अपने पितरों को बड़े–बड़े पापों से तारता है और रोपणकर्ता इस मनुष्य लोक में भी कीर्ति तथा शुभ परिणाम को प्राप्त करता है। पीपल के वृक्ष के बारे में तो लिखा गया है कि यदि कोई अश्वत्य वृक्ष का आरोपण करता है, तो वहीं उसके लिए एक लाख पुत्रों से भी बढ़कर है इसलिए अपनी सद्गति के लिए कम से कम एक या दो या तीन अश्वत्थ वृक्ष लगाना चाहिए।

जलाशय के समीप पीपल का वृक्ष लगाकर मनुष्य जिस फल को प्राप्त करता है, वह सैकड़ों यज्ञों से भी नहीं मिल सकता है।

अमरीकी राष्ट्रपति ओबामा जब गणतन्त्र दिवस के अवसर पर भारत आये थे, तब राजघाट पर श्रृद्धापुष्प चढ़ाने के बाद उन्होंने शास्त्रों में सबसे अधिक प्रशान्ति, अश्वत्थ का वृक्ष भी लगाया। ओमाबा भारत की हजारों साल पुरानी परम्परा के वाहक अश्वत्थ का वृक्ष लगाकर हमारी पारम्परिक महत्ता को अभिवादन कर गये।

पीपल मात्र वृक्ष ही नहीं वह तो हमारी संस्कृति, सभ्यता का सजीव प्रतिमान है।

यह भी मान्यता है कि इस के मूल से दस हाथ चारों ओर का क्षेत्र पवित्र पुरूषोत्तम क्षेत्र माना गया है, उसकी छाया जहां तक पहुंचती है तथा अश्वत्थ वृक्ष के संसर्ग में बहने वाला जल जहां तक पहुंचता है, वह क्षेत्र गंगा के समान पवित्र हो जाता है। पीपल ही एक मात्र ऐसा वृक्ष है, जिसमें कीड़े नहीं लगते हैं।

आज जब अधिकाधिक वृक्ष लगाना हमारा नैतिक धार्मिक व राष्ट्रीय दायित्व है तो हमें फलदार, छायादार स्वास्थ्यवर्द्धक वृक्ष लगाना चाहिए ताकि भावी पीढ़ी को हरा–भरा राष्ट्र मिले व दूषित वातावरण से छुटकारा मिले। घर के बाहर, खेतों की मेंड़ों, सड़क के किनारे, मन्दिरों के अहाते, स्कूलों के बाहर, मुक्तिधाम में पौधे लगायें ताकि सर्वत्र हरियाली का साम्राज्य स्थापित हो तथा आने वाले कुछ वर्षो में प्रदूषण मुक्त हिन्दुस्तान दिखे।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी, इसमें दो राय नहीं।

जवाहरलाल नेहरू